9

उत्तम आकिंचन्य धर्मांग पूजा

श्री दशलक्षण धर्म विधान

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

: स्वर :
पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

: रचयिता :
कविवर पण्डित राजमल पवैया

: स्वर :
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

9

श्री उत्तम आकिंचन्य धर्मांग पूजा

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

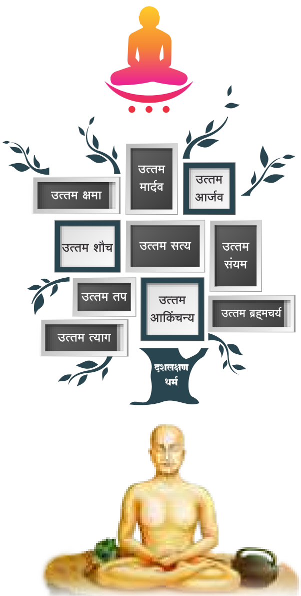

उत्तम आकिंचन्य धर्मांग पूजन

स्थापना

(छन्द–कुण्डलिया)

अपरिग्रह का मुकुट है निज आकिंचन धर्म।
जो भी इसको धारते हो जाते निष्कर्म।।
हो जाते निष्कर्म आत्मा को ही ध्याकर।
त्रिलोकाग्र पर जा विराजते शिवसुख पाकर।।
वे ही ध्रुवसुख पाते जो होते हैं निस्पृह।
सच्चे मुनियों को ही भाता है अपरिग्रह।।

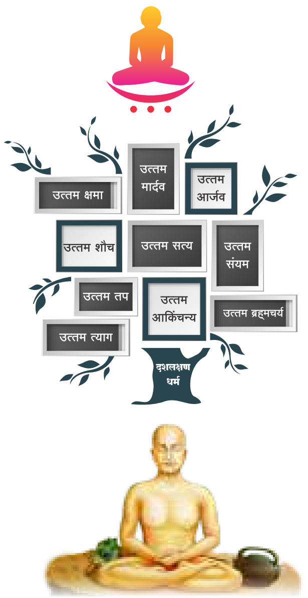

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्ग!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्ग!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्ग!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

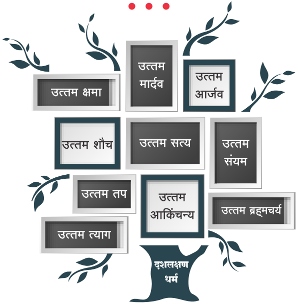

अष्टक

(छन्द–विधाता)

चढ़ाऊँ नीर आकिंचन बनूँ मैं नि:स्पृही स्वामी।
जन्म मरणादि दुख नाशूँ स्वपद पाऊँ परम नामी।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

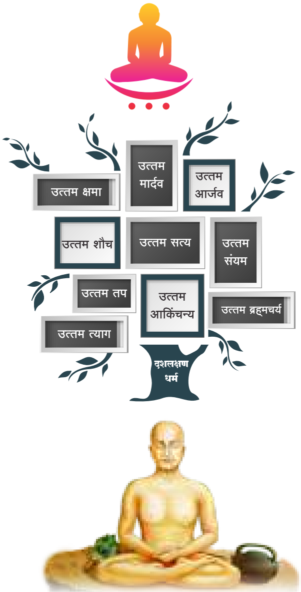

शुद्ध चंदन चढ़ाऊँ मैं प्राप्त कर धर्म आकिंचन।
भवातप ज्वर विनाशूँ मैं हरूँ भव राग के बंधन।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय क्रोधकषाय–
विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

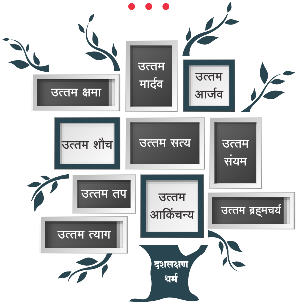

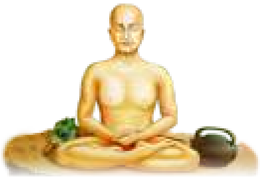

शुद्ध अक्षत चढ़ाऊँ मैं आकिंचन भावना भाऊँ।
प्राप्त अक्षय स्वपद करके परम शिव सौख्य उपजाऊँ।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय मानकषाय–
विनाशनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

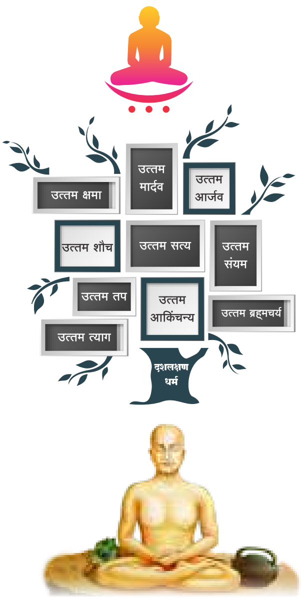

आकिंचन पुष्प की महिमा काम शर कष्ट हरती है।
शील गुण की प्रदाता है सौख्य जो उर में भरती है।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय मायाकषाय–
विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

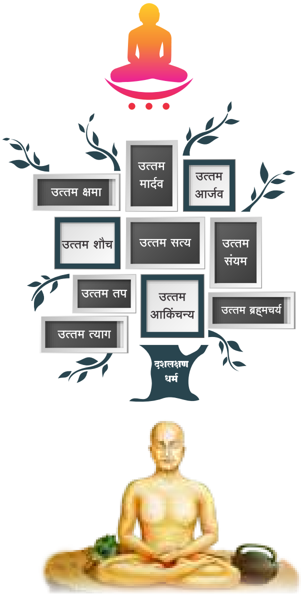

आकिंचन भावमय नैवेद्य मैंने आज पाये हैं।
अनाहारी स्वपद पाने स्वयं के गीत गाये हैं।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय लोभकषाय–
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

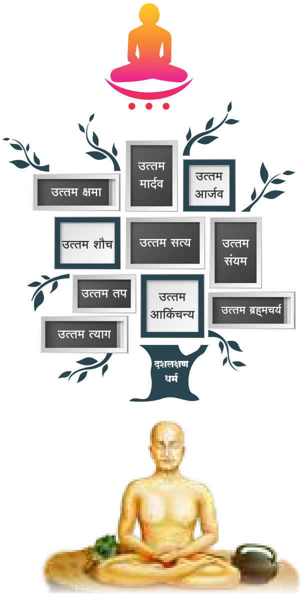

आकिंचन दीप ज्योतिर्मय मोह भ्रम–तम विनाशक हैं।
घातिया कर्म नाशक हैं ज्ञान निज पर प्रकाशक हैं।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय मोहान्धकार–
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

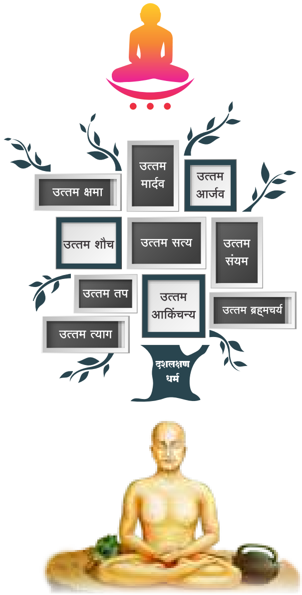

आकिंचन भाव की निज धूप उर में मोद भरती है।
शुक्लध्यानी बनाती है कर्म वसु घात करती है।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय विभावपरिणति-
विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

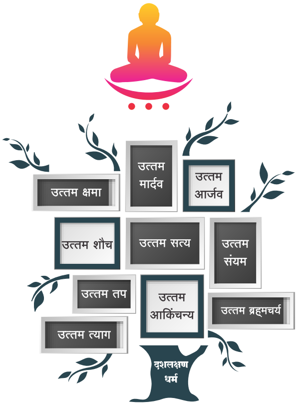

आकिंचन भावना के फल मोक्ष फल के प्रदाता हैं।
राग–द्वेषादि भावों के ये ही तो पूर्ण घाता हैं।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

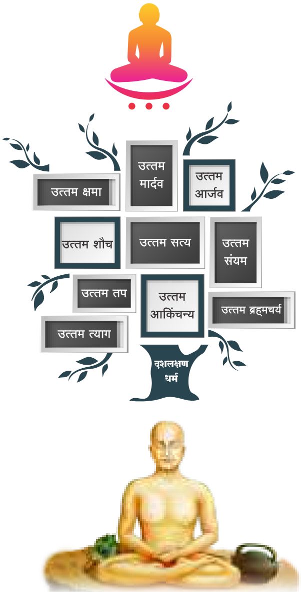

आकिंचनभाव के निज अर्घ्य महिमामय बनाऊँगा।
स्वपद पाऊँ अनर्घ्य अपना ध्यान फल उर सजाऊँगा।।
परिग्रह से रहित है धर्म आकिंचन परम उत्तम।
मुनीश्वर धारते इसको अनिच्छुक भाव ले अनुपम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

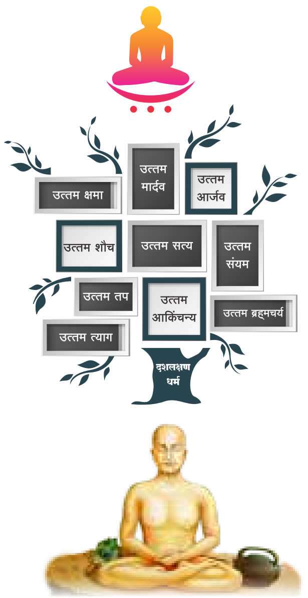

अर्घ्यावलि

(छन्द–दिग्पाल)

संसार यह अथिर है ध्रुव है न रंच मानो।
माता पिता त्रिया सुत सब ही अनित्य जानो।।
चक्री के भोग भी तो हैं नाशवान सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री अनित्यभावनारूपोत्तमाकिंचन्यर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

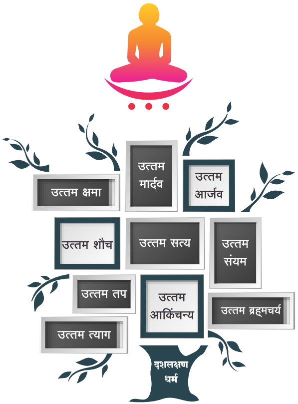

जब आयु पूर्ण हो तो कोई न शरण होता।
यह मंत्र तंत्र औषधि धन आदि व्यर्थ होता।।
कोई न सहायक हैं इंद्रादि देव सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री अशरणभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

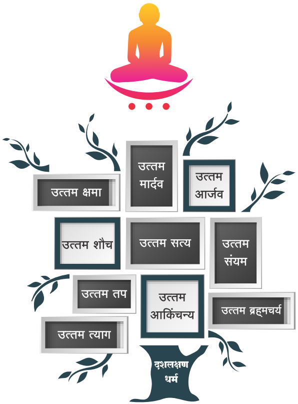

संसार राग–द्वेषों का मूल है महावन।
कोई भी नहीं सुखिया धनवान हो या निर्धन।।
चारों ही गति में जाकर पाये हैं दुख अपारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री संसारभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

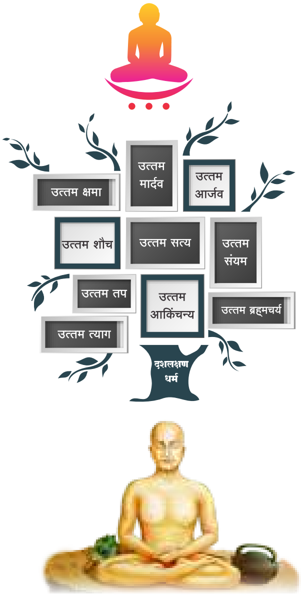

जिय जन्मता अकेला मरता भी है अकेला।
अरु पुण्य पाप का पल भी भोगता अकेला।।
कोई न संगी साथी सब एकले विचारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री एकत्वभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

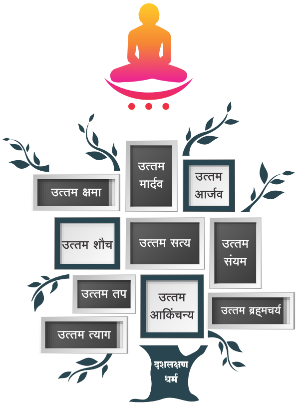

निज आत्मा से सारे ही द्रव्य भिन्न जानो।
अपने से तो अभिन्न यह आत्मा है मानो।।
अन्यत्व भावना यह भाते हैं सुमुनि सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री अन्यत्वभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

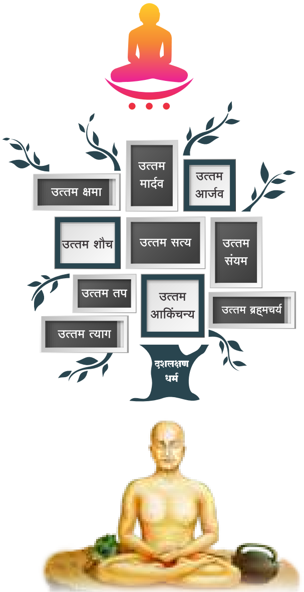

तन सप्त धातु पूरित अपवित्र है सदा ही।
मल-मूत्र से भरा है यह अशुचि है सदा ही।।
पर शुद्ध बुद्ध चेतन चिद्रूप जीव सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री अशुचिभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

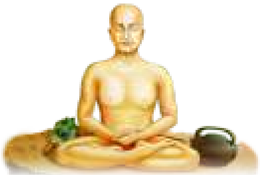

शुभ–अशुभ भाव दूषित संसार के हैं प्राणी।
वसु कर्म बंध करते जो होते हैं अज्ञानी।।
आस्रव को नाश करते मुनिराज साधु सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री आस्रवभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

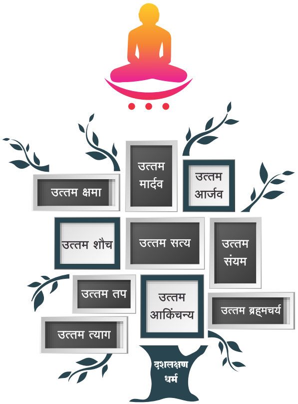

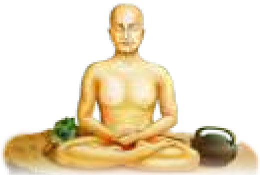

आस्रव निरोध संवर शुभ अशुभ भाव नाशक।
जो धारते हैं संवर बनते स्वपर प्रकाशक।।
जो आस्रव से जुड़ते पाते हैं दुख बिचारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री संवरभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

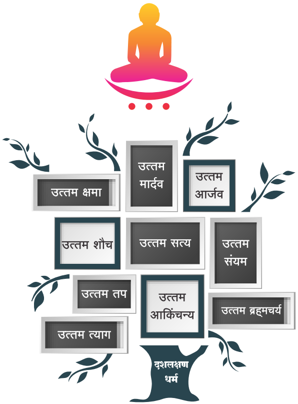

सविपाक निर्जरा तो बिलकुल अकाम होती।
अविपाक निर्जरा ही कर्मों के मल को धोती।।
है शुद्ध निर्जरा के स्वामी सुमुनि हमारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री निर्जराभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

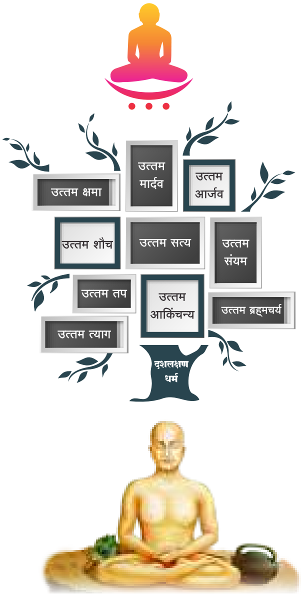

छह द्रव्य से पूरित है यह तीन लोक सारा।
चारों ही गति के दुख से दुखिया है जगत सारा।।
जो जग स्वरूप समझे वह आत्मा सँवारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री लोकभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

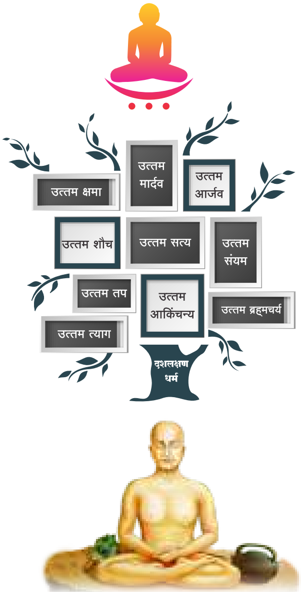

वस्तुस्वरूप समझो निज बोधि प्राप्त कर लो।
त्रयलोक में जो दुर्लभ वह पाकर कष्ट हर लो।।
जो हैं यथार्थ ज्ञानी भव-भोग से वे हारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री बोधिदुर्लभभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

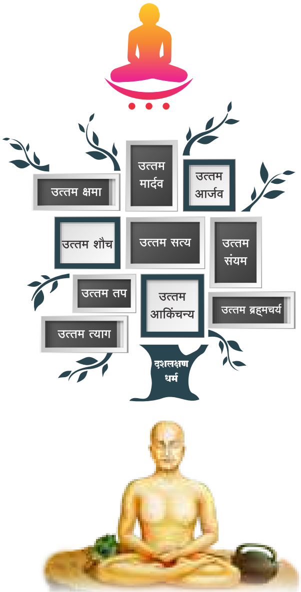

जो धर्म धारते हैं रत्नत्रयी हृदय में।
वे आत्मधर्म पाकर जाते हैं शिव निलय में।।
निज आत्म धर्म आश्रय लेते हैं सुमुनि सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मभावनारूपोत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

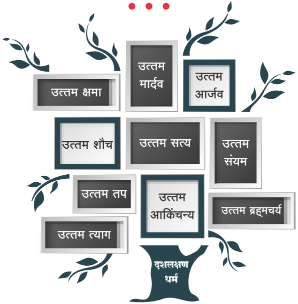

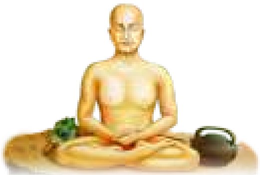

माता पिता सुतादिक नारी व भ्रात है पर।
गज अश्व आदि चेतन सारे के सारे नश्वर।।
संग इनका त्याग दो तो पाओगे सुक्ख सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री चेतनरूपबाह्यपरिग्रहत्यागआकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

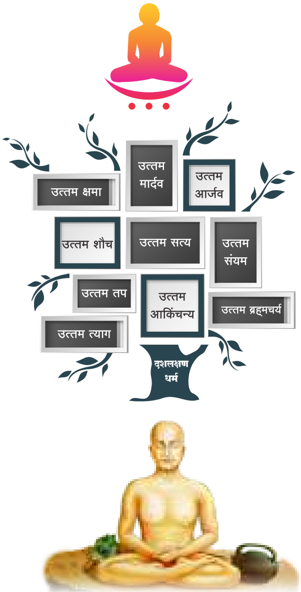

ये राग–द्वेष आदिक अंतर में जो होते हैं।
चारों ही गति के क्लेशों का बीज ये बोते हैं।।
परिग्रह ये अंतरंगी त्यागो सदा को सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री अंतरंगपरिग्रहत्यागआकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

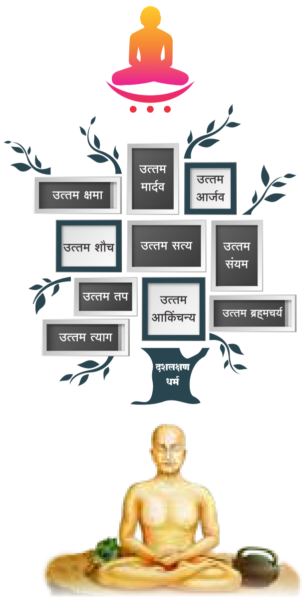

ये राग–द्वेष आदिक अंतर में जो होते हैं।
चारों ही गति के क्लेशों का बीज ये बोते हैं।।
परिग्रह ये अंतरंगी त्यागो सदा को सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री अंतरंगपरिग्रहत्यागआकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

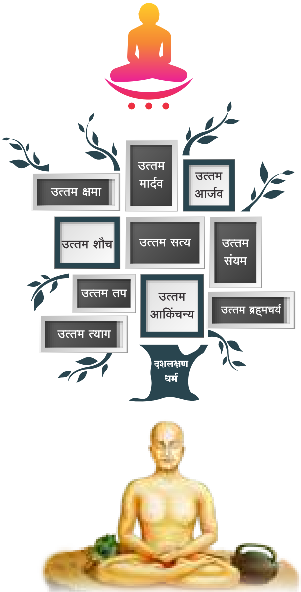

निर्ग्रंथ दिगंबर मुनि बनना तुम्हें पड़ेगा।
निज आत्मा के भीतर अड़ना तुम्हें पड़ेगा।।
हो जाओगे अकिंचन परभाव त्याग सारे।
उत्तम है धर्म आकिंचन पार जो उतारे।।

ॐ ह्रीं श्री विविधपरिग्रहत्यागआकिंचन्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

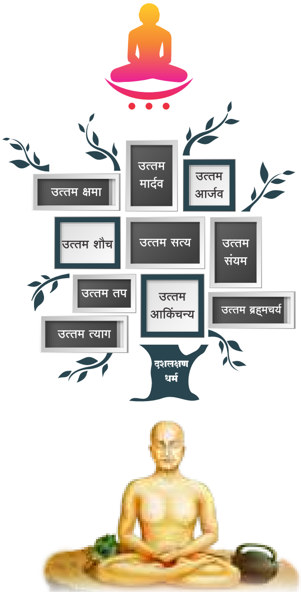

जयमाला

(छन्द–दिग्पाल)

पाया है हमने अब तो संसार का किनारा।
सम्यक्त्व को पाकर के निज ज्ञान उर में धारा।।
चारित्र धारते ही संयम भी उर में आया।
रत्नत्रय हमने पाया जो है सदा हमारा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

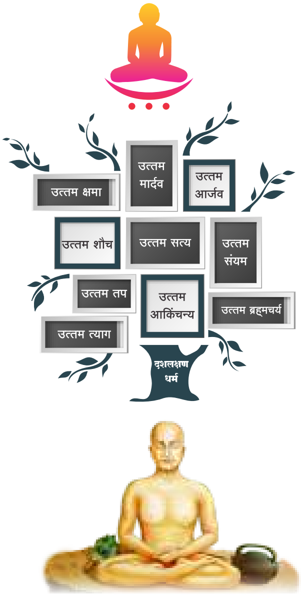

ध्यानाग्नि प्रज्वलित कर कर्मों को जलाया है।
निर्भार हो गए हम पाया है सुख अपारा।।
निर्ग्रंथ सुमुनि बनकर शुद्धोपयोग भाया।
अतएव स्व-तरणी को भवपार अब उतारा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

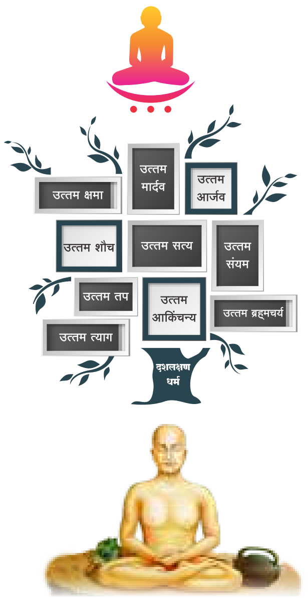

अनुभव स्वरस को पीकर निजध्यान लगाया था।
निज भक्ति से मिला है शुद्धात्मा हमारा।।
ध्रुवधाम के सदा को हम बन गए हैं स्वामी।
जड़ देह से पृथक् हो निज आत्मा संवारा।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

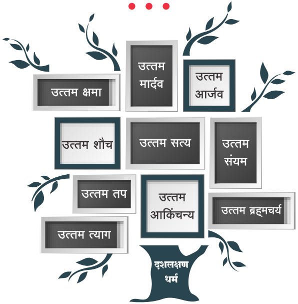

अपरिग्रही आकिंचन जब हृदय में आता है।
गुंजायमान होता है तब आत्मा हमारा।।
गुणगान आकिंचन का मुनिराज ही करते हैं।
कब प्राप्त हो आकिंचन अब यही उर में धारा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

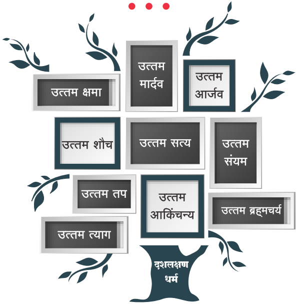

आशीर्वाद

(छन्द–दोहा)

पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, आकिंचन गुणधाम।
अपरिग्रह धारण करूँ, पाऊँ निज ध्रुवधाम।।

इत्याशीर्वादः

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

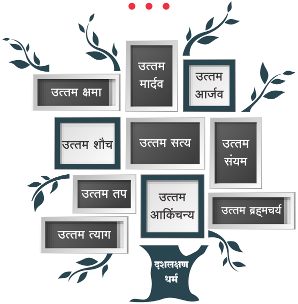

-: जाप्य मंत्र :-

।। ॐ ह्रीं श्री उत्तमआकिंचन्यधर्माङ्गाय नमः ।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु